How to Cite:
Dr. Darshan Singh (Dec 2019). Mahatma Jyotiba Phule: A Source of Inspiration
International Journal of Economic Perspectives,*13*(1),29-34.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

महात्मा ज्योतिबा फुले : एक प्रेरणा स्रोत

डॉ. दर्शन सिंह
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी)
ज्योतिबा फुले राजकीय महाविद्यालय
रादौर (यमुनानगर)

महाराष्ट्र में जन्मे ज्योतिबाफुले उन्नीसवीं सदी के एक महान् व्यक्तित्व थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, जातीयता का निर्मूलन किसान और कामगार जीवन में मूलभूत परिवर्तन लाने जैसे समाज सुधारों के लिए अपना पूरा जीवन लगाया। उनके सुधार सम्बन्धी कार्यों का सनातनियों ने जमकर विरोध किया परन्तु वे शूद्रों और अति शूद्रों में स्वाभिमान और आत्म गौरव की भावना जगाने का अथक प्रयास करते रहे। उन्नीसवीं शदी के मध्य में उन्होंने किसानों, मजदूरों, महिलाओं और तमाम पिछड़े तबकों के लोगों को अपने अधिकार दिलाने के लिए विभिन्न आंदोलनों का सूत्रपात किया। यहाँ उनके द्वारा समाज कल्याण के लिए किए गए विविध कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

प्राथमिक शिक्षा की मांग :

ज्योतिबा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जनता को दी जाने वाली प्राथमिक शिक्षा की हालत ही बहुत खराब है। सरकार की शिक्षा विषयक नीति ही मूलतः अव्यावहारिक और अदूरदर्शी होने के कारण यह हुआ है उनका कहना था कि – ''इन स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा संतोषजनक और किसी ठोस नींव पर आधारित नहीं है। छात्रों के भावी जीवन की दृष्टि से यह सर्वथा निकम्मी है। समाज की जरूरतों को ध्यान में रखकर उपयुक्तता की दृष्टि से इस शिक्षा व्यवस्था में मूलतः परिवर्तन करना होगा।''

ज्योतिबा की स्पष्ट राय थी कि सर्वत्र शिक्षा का प्रबंध करने के प्रश्न पर सरकार को तुरंत ध्यान देना चाहिए क्योंकि जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक समाज की स्थिति नहीं सुधरेगी। वे लगातार तीस वर्ष तक इसी बात पर बल देते रहे। परन्तु सरकार की शिक्षा का उद्देश्य था शासन के लिए नौकर तैयार करना और वे भी ऊँची जातियों के क्योंकि ऊँची जातियों के सरकारी नौकर जनता के साथ क्रूरता से पेश आते और जनहितों के बदले सरकार के हितों पर अधिक ध्यान देते। इससे कनिष्ठ जातियो में धारणा बनी हुई थी कि देशी नौकरों की अपेक्षा अंग्रेज आदि हैं। ज्योतिबा के शिक्षा प्रसार के कार्य के कारण अब कनिष्ठ जातियों के लोग जागृत हो गये थे। वे सार्वजनिक शिक्षा की मांग करने लगे। तब सरकार ने 1882 में प्राथमिक शिक्षा के बारे विचार करने हेतु इंटर कमीशन की नियुक्ति की।

इस कमीशन के सामने उपस्थित होने पर अनेक लोगों ने कनिष्ठ जातियों में शिक्षा-प्रसार करने के प्रस्ताव का विरोध किया और कहा कि पहले वरिष्ठ जातियों में ही शिक्षा-प्रसार किया जाए। लेकिन इंटर कमीशन के सामने अपनी बात प्रस्तुत करते समय ज्योतिबा ने इस बात पर बल दिया कि पहले गाँव-खेड़ो में फैले हुए किसानों और कनिष्ठ जातियों को ही प्राथमिक शिक्षा दी जानी चाहिए। यदि सरकार वास्तव में प्रजा का कल्याण करना चाहती है तो पहले गांव-देशजों में ही शिक्षा का प्रसार किया जाना चाहिए। 'विद्या बिन मति गई, मति बिन गई नीति'2 उक्ति भी शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करती हैं

© 2019 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Darshan Singh**.
Submitted: 27 May 2019, Revised: 09 July 2019, Accepted: 18 Sep 2019, Published 30 Dec 2019

How to Cite:
Dr. Darshan Singh (Dec 2019). Mahatma Jyotiba Phule: A Source of Inspiration
International Journal of Economic Perspectives,*13*(1),29-34.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

स्त्री शिक्षा की शुरूआतः

ज्योतिबा फुले ऐसे पहले भारतीय थे, जिन्होंने केवल लड़कियों की पढ़ाई के लिए स्वतंत्र स्कूल खोलने की दूरदर्शिता दिखाई। उन्होंने 3 जुलाई, 1857 में बुधवार पेठ में रहने वाले अण्णा साहब चिपलूणकर के विशाल भवन में केवल लड़कियों के लिए एक स्कूल खोल दिया। स्त्रियों को, और विशेषकर शूद्र तथा अतिशूद्र स्त्रियों को शिक्षा देना कट्टरपंथियों की नजर में भयंकर पाप था। पुणे में पहली कन्या पाठशाला की शुरूआत देखकर कटटरपंथी कहने लगे – ''महिलाएँ बड़ी दुष्ट, चंचल और अविचारशील होती हैं, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। यदि महिला को पढ़ाया जाए, तो वह कुमार्ग पर चलेगी, घर का सुख-चैन धूल में मिला देगी।''3 फलस्वरूप 'नारी-शिक्षा' जैसे पवित्र-कार्य का सभी ओर विरोध होने लगा। लेकिन ज्योतिबा अपनी बात पर अटल रहे। लड़कियों का दिल पाठशाला में लगे, उनकी दिलचस्पी बनी रहे, इस बात का वे बराबर ख्याल रखते थे। वे उन्हें शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते, खेल सिखाते, मिठाई बांटते और मानो उनकी माँ बन जाते।

ज्योतिबा के महत कार्यों की प्रेरणा थी सावित्रीबाई। उनका साथ न होता तो शायद जितना कुछ अपने जीवन में वे कर सके, न कर पाते। निरन्तर छात्राओं की संख्या बढ़ने पर उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को अध्यापक बताया। सावित्रीबाई और ज्योतिबा के सतत प्रयास से उनकी छात्राएँ ही शिक्षा का प्रचार करने वाली प्रचारिकाएँ बनने लगी।

अछूतों के लिए पानीः

पूने में उस समय पेशवाओं द्वारा बनवाए गए पीने के पानी के छोटे-बड़े हौज होते थे। इन हौजों पर महार, चमार आदि शूद्र व अतिशूद्र पानी नहीं भर सकते थे। तपती दोपहरी में वे कई बार पानी मांग-मांग कर थक जाते थे लेकिन उन्हें एक घूँट पानी मिलना मुश्किल हो जाता था। उस समय की नगरपालिका भी कोई स्थायी इंतजाम नहीं कर पा रही थी। केवल पानी के लिए ही शूद्रों की जो हालत होती थी इन्हें देखना-सहना ज्योतिबा के लिए संभव नहीं था।

मानवीय अधिकारों के ऊँचे तत्व के अनुसार ज्योतिबा ने सन् 1868 में अपना हौज अछूतों के लिए खोल दिया। लेकिन पाप-पुण्य और पूर्व कर्म के काल्पनिक भय से अछूतों की पानी भरने की हिम्मत नहीं हुई। तब ज्योतिबा उन्हें हाथ पकड़कर हौज के पास ले गए और उनको पानी भरने को कहा। इतना ही नहीं पानी से भरे बर्तन उनके सिर पर रखे। इस तरह उन्होंने शूद्रों को पिछले हजारों वर्षों की मानसिक गुलामी से मुक्त किया।

छुआछूत निवारण घोषणा पत्रः

अछूतों को अपना हौज खुला करके ही ज्योतिबा नहीं रूके। रूकना उनके स्वभाव में था ही नही। कुछ ही दिनों बाद सन् 1873 में उन्होंने छुआछूत निवारण का अपना घोषणापत्र जाहिर किया। उसमें कहा गया था – ''जो शूद्र या अन्य मनुष्य को मानकर, नीति के अनुसार और साफ सुथरा व्यवसाय करने का निश्चय कर तदनुसार आचरण कर रहे हैं। ऐसा मेरा विश्वास होने पर मैं उन्हें अपने परिवार का भाई समझूंगा और इनके साथ अन्न ग्रहण करूंगा, फिर चाहे वे किसी भी देश के निवासी हों।''4

इससे स्पष्ट होता है कि ज्योतिबा के अन्तर्मन में छुआछूत के उन्मूलन के प्रति कैसी लगन थी।

© 2019 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Darshan Singh**.
Submitted: 27 May 2019, Revised: 09 July 2019, Accepted: 18 Sep 2019, Published 30 Dec 2019

How to Cite:
Dr. Darshan Singh (Dec 2019). Mahatma Jyotiba Phule: A Source of Inspiration
International Journal of Economic Perspectives,*13*(1),29-34.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

सती प्रथा का विरोधः

ज्योतिबा केवल सुधारक नहीं थे बल्कि वे सच्चे अर्थों में कर्मवीर थे। उनका ध्यान एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक सुधार की ओर गया। जिन धार्मिक रूढ़ियों और घातक सामाजिक रीति-रिवाजों को वे अनुचित समझते थे, उन पर उन्होंने तीखे प्रहार करना शुरू किया। बंगाल के राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरूद्ध आंदोलन किया था और अंग्रेज सरकार ने सन् 1829 ई. में यह प्रथा बंद कर दी, फिर भी यह क्रूर प्रथा सन् 1852 तक पूर्णतः नष्ट नहीं हुई थी। ईसा पूर्वकाल में भारत में मृत पति के साथ पत्नी के सती हो जाने की प्रथा थी। यद्यपि कानून में सती प्रथा बंद हो जाने के कारण विधवा चिता की ज्वाला से तो बच गई। परन्तु उसे विधवा-अवस्था में भयंकर तकलीफों और अपमानों का सामना करते हुए कष्टदायक जीवन बिताना पड़ता था।

वास्तव में अपने को वरिष्ठ कहलाने वाले लोग ही विधवाओं का प्राकृतिक धर्म छीनकर इनके जीवन को मिट्टी में मिलाने का पाप करते थे। ज्योतिबा ने ऐसे पापियों का घोर विरोध किया और सतीप्रथा के कारण महिलाओं को दी जाने वाली यातनाओं को निंदनीय करार दिया।

विधवा-मुंडन बंदः

ज्योतिबा ने ही सबसे पहले विधवा-मुंडन की प्रथा बंद करने का साहस किया। उन्होंने बम्बई में नाइयों की एक सभा आयोजित की। उसमें लगभग 400-500 नाई उपस्थित हुए। एक नाई ने सभा में कहा कि ब्राह्मण बीस-पच्चीस पैसों के लिए यह शास्त्र विरोधी कुकर्म हम लोगों से करवाते है और स्वयं आठ यादस रूपए हथियाते हैं। उस सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि कोई भी नाई आज के बाद विधवाओं के केशों का मुंडन नहीं करेगा। भाइयों की इस सभा का समाचार इंग्लैंड पहुंच जाने पर वहां के नाइयों ने इस सहृदयतापूर्ण कार्य के उपलक्ष्य में बधाई पत्र भेजा। यह खबर मिलने पर अन्य नगरों के नाइयों ने विधवा-मुंडन का कुकर्म बंद कर दिया। इस प्रकार महात्मा ज्योतिबा के प्रयास से अब विधवाएं भी अपने केशों को रखकर समाज में एक सम्मानपूर्वकजीवन बिताने लगी।

विधवा-विवाह का समर्थनः

विधवा-विवाह का प्रश्न ब्राह्मण एवं तत्कालीन सभी ऊँची जातियों से सम्बन्धित था। फिर भी विधवाओं की दीनावस्था देखकर ज्योतिबा का दिल भर आता। उनका नैतिक अधःपतन देखकर ज्योतिबा का दिल पसीजता। उनके भ्रूण हत्या के खत से सराबोर हाथ देखकर उनका मन बेचैन हो उठता। इसलिए उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह के आंदोलन का सक्रिय समर्थन किया और वे इस आंदोलन में अग्रणी रहे। वैसे महाराष्ट्र में सन् 1840 से ही विधवा-विवाह के पक्ष में प्रचार हुआ था। सन् 1842 में बेलगांव में दो ब्राह्मण विधवाओं का पुनर्विवाह हुआ। इसी प्रकार 3 मार्च, 1860 को पुणे में शेणनी जाति की एक विधवा और विधुर का विवाह हुआ। संभवतः यह विवाह महात्मा ज्योतिबा की ही प्रेरणा से हुआ।

जमींदारों के विरूद्ध कदमः

पुणे जिले के जुन्नर क्षेत्र में यहाँ के जमींदार और महाजन बहुत जुल्म ढा रहे थे। इससे पट्टेदार काश्तकारों की बड़ी दुर्दशा हो रही थी। उन्होंने अपना एक संगठन बनाया और ज्योतिबा ने इस संगठन की पूरी मदद की। उन्होंने सलाह दी कि जब तक अन्याय दूर नहीं

© 2019 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Darshan Singh**.
Submitted: 27 May 2019, Revised: 09 July 2019, Accepted: 18 Sep 2019, Published 30 Dec 2019

How to Cite:
Dr. Darshan Singh (Dec 2019). Mahatma Jyotiba Phule: A Source of Inspiration
International Journal of Economic Perspectives,*13*(1),29-34.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

किया जाता तब तक काश्तकार खेत में हल न चलाएँ। इससे कृषि-भूमि परती होने लगी। तब जमींदारों, महाजनों, तथा अपने को शिक्षित देशभक्त कहलाने वाले लोगों ने ज्योतिबा के विरूद्ध हो हल्ला बोल दिया। कुछ काश्तकारों को प्रलोभन देकर जमींदारों ने संगठन तोडने की कोशिश की परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। अंत में ज्योतिबा के माध्यम से काश्तकारों और जमीदारों में समझौता हुआ। ज्योतिबा कहते थे – ''जब तक हल चलाने वाले किसानों को खेतों का स्वामी नहीं बनाया जाता, तब तक भारत जैसे कृषि प्रधान देश की उन्नति नहीं होगी और न ही पैदावार बढेगी।''[5]

कृषि सुधारः

पुणे नगर में निवास करने पर भी ज्योतिबा ने किसानों की स्थिति की ओर ध्यान दिया कृषि में सुधार हो इस उद्देश्य से ज्योतिबा ने उक्त विषय से सम्बधित निबंध मंगवाए और इन निबन्धों तथा पैदावार बढाने वाले किसानों को पुरस्कार दिए। उन्होंने किसानों को सुधरे हुए हलों, उत्तम बीजों आदि का महत्व बताया और प्रत्येक खेत में मेंड बनाने पर बल दिया। किसानों को दुधारू जानवरों का पालन कर भेड़ बकरियों का भी पालन करना चाहिए। सरकार को पशु औषधालय खोजने चाहिए आदि महत्वपूर्ण सुझाव देते थे। वे इस बात पर जोर देते थे कि – ''किसान सुखी तो सारा विश्व सुखी।''[6]

सन् 1889 में बम्बई में सम्पन्न कांग्रेस के अधिवेशन के प्रवेश द्वार पर उन्होंने किसान की एक बड़ी प्रतिमा स्थापित की और उसके जरिए किसानों की दीनावस्था से नेताओं से परिचित करवाया। उन्होंने नेताओं से कहा – ''जब तक आप में बहुसंख्यक किसान वर्ग के प्रति निधि नहीं है, तब तक आप जनता के नेता कहलाने के पास नहीं है।''[7]

सन् 1885 में उन्होंने एक चित्र छपवाया। चित्र का शीर्षक था – ''सुधार का क्षेत्र।'' इस चित्र में किसान के सिर पर एक पेड़ लगा हुआ दिखाया गया था पर इससे पहले पंडे पुरोहित, सेठ साहूकार और एकाधारी दिखाए गए थे और उनके भाव को किसान को झुका हुआ दिखाया गया था।

सरकार किसानों से धन वसूल करती है पर बदले में कुछ नहीं देती थी। इसलिए उन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में सरकार को खरी-खोटी सुनाई।

दीनबन्धु समाचार पत्र का प्रकाशन :

महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा किए अनेक कार्यों में 'दीनबन्धु' नामक समाचार पत्र का जिक्र करना भी उल्लेखनीय है। 'दीन' का अर्थ है 'गरीब' और 'बन्धु' का मतलब है 'भाई'। इसका सीधा सा अर्थ हुआ गरीबों का मददगार। मुंबई के हमारे कुछ खुशहाल लोगों की मदद से दीनबन्धु का प्रकाश शुरू हुआ। उसके प्रथम सम्पादक कृष्णराव थे। शुरू-शुरू में यह समाचार पत्र साप्ताहिक था। समाचार पत्र सफलतापूर्वक निकलने लगा, पर आगे चलकर महाराष्ट्र में भीषण अकाल पड़ गया। लोगों को काम मिलना मुश्किल हो गया। पीडित लोगों की हालत पशुओं के समान होने लगी। इस समाचार पत्र के माध्यम से सरकार की आलोचना होने लगी। जब सरकार ने अकाल पीडित लोगों की मदद के लिए कोई विशेष तत्परता नहीं दिखाई तो ज्योतिबा ने अपने समाचार पत्र के माध्यम से सरकार को अकाल पीडित लोगों की सहायता करने के लिए मजबूर कर दिया। सरकार की ओर से अकाल पीड़ितों को सहायता पहुंचाने का काम पूरी तत्परता से किया गया। इसका सारा क्षेय हमें महात्मा ज्योतिबा फुले जी के दीनबन्धु समाचार पत्र को ही देना चाहिए।

© 2019 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Darshan Singh**.
Submitted: 27 May 2019, Revised: 09 July 2019, Accepted: 18 Sep 2019, Published 30 Dec 2019

How to Cite:
Dr. Darshan Singh (Dec 2019). Mahatma Jyotiba Phule: A Source of Inspiration
International Journal of Economic Perspectives,*13*(1),29-34.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

दलितों के मुक्तिदाताः

महात्मा ज्योतिबाफुले अपने ढंग से अधिकार-वंचितों, दलितों, बहिष्कृतों, अछूतों और गरीबों को जगाना चाहते थे। वह सामाजिक व्यवस्था में अमूल-चूल परिवर्तन के इच्छुक थे। इसके लिए वे जीवन भर जूझते रहे, संघर्ष करते रहे।

ज्योतिबा ही ऐसे युगपुरूष थे, जिन्होंने अपने शैक्षणिक क्रिया कलापों एवं अन्य गतिविधियों द्वारा दलित-पिछडे समाज की मुक्ति के लिए लगातार संघर्ष किया और सफलआंदोलन की अगुवाई की। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, अंधश्रद्धा, धार्मिक रूढ़िवादिता, पुरोहितवाद, संकीर्ण विचारों, ब्राह्मणी कर्म-काण्डों, अस्पृश्यता आदि सभी बुराइयों का विरोध किया। ब्राह्मणवादी कटटरपंथियों का दृढता से मुकाबला किया। इसके साथ ही समाज के उपेक्षितों-दलितों और निम्न जातियों में शिक्षा और सामाजिक जागृति की लहर फैलाई। दीन-दलितों की सेवा को उन्होंने अपना परम कर्तव्य और धर्म की संज्ञा दी।

भगवान गौतम बुद्ध के पश्चात ज्योतिबा फुले ने सामाजिक चेतना और सत्यकार्य का पथ उन लोगों को दिखाया जिनकी प्रगति के मार्ग धूर्त शासकों द्वारा सदा-सदा के लिए अवरूद्ध कर दिए गए थे। उन्होंने मानसिक रूप से मंद और आर्थिक रूप से पंगु बनाए गए समाज में क्रांति का बीज बो दिया था।

शोधक समाज की स्थापनाः

समाज में धर्म के नाम पर जातिभेद और अछूतपन का बहुत भयंकर नशा चढ़ा हुआ था। स्त्रियों पर अन्याय हो रहा था। अस्पृश्यों की कौढी के बराबर कीमत नहीं थी। शूद्र लोग भी अधिकारों से वंचित थे और ये लोग जैसे-तैसे बहिष्कृत और तिरस्कृत जीवन जी रहे थे। तब ऐसी परिस्थितियों में लोगों को उनका सच्चा-धर्म समझाने की बहुत जरूरत थी। इसलिए महात्मा ज्योतिबा फुले ने 24 सितम्बर, 1873 में 'सत्यशोधक समाज' नामक संस्था की स्थापना की। सत्यशोधक समाज का मुख्य काम सत्य की स्थापना के लिए लड़ना था। इस सत्यशोधक समाज में सभी जातियों के लोगों को प्रवेश पाने का अधिकार था। धर्म के नाम पर पाखण्डों को खत्म करना इस सत्यशोधक समाज का मुख्य दायित्व था। समाज में व्याप्त अन्याय-अत्याचारों को दूर करना ही इसका प्रमुख मुद्दा था। नशाबंदी, स्वदेशी और धार्मिक कार्यों में पुरोहितों की मध्यस्ता, शादियों व दूसरे सामाजिक संस्कारों में कम खर्च करने आदि विषयों पर चर्चा होती थी। ज्योतिबा से प्रेरित होकर अनेक कार्यकर्ताओं ने सत्यशोधक आंदोलन का कार्य पूरी तत्परता के साथ किया। फलस्वरूप ज्योतिबा ने इस समाज की स्थापना करके लोगों में जागरूकता लाने का भरपूर प्रयास किया। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि महात्मा ज्योतिबा फुले आधुनिक महाराष्ट्र के एक महान् समाज चिंतक थे। उन्होंने किसान श्रमिक, बहुजन समाज, दलित और महिलाओं पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। रूढ़िवादी विचारों पर आलोचना रूसी चाबुक चलाया। शूद्रों और अतिशूद्रों को आत्म सम्मान व गौरव की भावना से ओत-प्रोत किया। विविध जातियों और पंथों के लोगों को भाईचारे की सीख दी। शिक्षा को हर दृष्टि से सुधार का प्रवेशद्वार बताया और यह द्वार शूद्रों-अतिशूद्रों व महिलाओं के लिए खुला कर दिया। दलित व शोषित वर्ग को उनका मानवीय हक दिलवाने के लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया। वे सही मायने में समाज-परिवर्तन के अग्रदूत थे। मानवतावाद के उपासक थे। वास्तव में महात्मा ज्योतिबा फुले का जीवन व कार्य हम सभी के

© 2019 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Darshan Singh**.
Submitted: 27 May 2019, Revised: 09 July 2019, Accepted: 18 Sep 2019, Published 30 Dec 2019

How to Cite:
Dr. Darshan Singh (Dec 2019). Mahatma Jyotiba Phule: A Source of Inspiration
International Journal of Economic Perspectives,*13*(1),29-34.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

लिए एक प्रेरणास्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. डॉ. मु.ब. राहा, भारतीय समाज क्रांति के जनकः महात्मा ज्योतिबा फुले, पृ.सं. 72
2. मुरलीधर जगताप, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत : महात्मा ज्योतिबाफुले, पृ.सं. 55
3. सम्पादक हरि नरके, महात्मा फुले : साहित्य और विचार, पृ.सं. 26
4. मुरलीधर जगताप, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत : महात्मा ज्योतिबा फुले, पृ.सं. 59
5. वही, पृ.सं. 63
6. वही, पृ.सं. 62
7. वही, पृ.सं. 62

© 2019 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Darshan Singh**.

Submitted: 27 May 2019, Revised: 09 July 2019, Accepted: 18 Sep 2019, Published 30 Dec 2019